Rural Studies (RM&D)
Patna University
Semester-I

Indian Rural Society & Rural Administration

Course/ Paper Code:-CC-1 Unit-5- Panchayati Raj

(E-content)

Dr. Shashi Gupta
Assistant Professor (Guest Faculty)
P.G. Department of Rural Studies (RM&D)
Patna University
Mobile No.:9472240600
Email: drsgupta01@gmail.com

उद्यमी (Entrepreneur)
उद्यमी शब्द का उद्भव, अर्थ, परिभाषा, विशेषताएं एवं उद्यमी वर्ग का उद्भव
Evolution, Meaning, Definitions, Characteristics and Emergence of Entrepreneur

---

उद्यमी शब्द का उद्भव (Evolution of the Word Entrepreneur)

उद्यमी शब्द का उद्भव फ्रेंच भाषा के शब्द एण्ट्रीपेण्ड्री से हुआ है जिसका अर्थ है 'एकाकी व्यक्ति ' अर्थात् वह व्यक्ति जो किसी नवीन उपक्रम की स्थापना की जोखिम उठाता है। इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले फ्रांसीसी अर्थशास्त्री श्री रिचर्ड केण्टीलोन ने अपने लेखन कार्य में किया था। उन्होंने उद्यमी का वर्णन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया था जो किसी उत्पाद को बेचने के लिए उसके मूल्य का भुगतान करता है यानि ऐसा व्यक्ति ऐसी वस्तु प्राप्त करने के लिए संसाधनों की जोखिम उठाता है। उनके अनुसार चतुर उद्यमी वाणिज्यिक लाभ के लिए सदैव संसाधनों के उपयोग के लिए श्रेष्ठ अवसरों की खोज में रहता है।

कुछ विद्वानों के अनुसार 'उद्यमी ' शब्द का प्रयोग सबसे पहले फ्रांस में 16वीं शताब्दी में फौजी अभियानों में किया गया था। 17वीं शताब्दी में इस शब्द का प्रयोग अन्य कार्यों में मुख्य रूप में नागरिक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में सड़कों , पुलों ,बंदरगाहों तथा भवनों के निर्माण के क्षेत्र में किया गया था।

उद्यमी का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning and Definitions of Entrepreneur)

उद्यमी का अर्थ - सरल भाषा में उद्यमी से आशय ऐसे व्यक्ति है जो किसी नवीन उपक्रम की स्थापना करने की जोखिम उठाता है, आवश्यक संसाधन एकत्रित करता है जैसे मानव, शक्ति, सामग्री एवं पूंजी आदि तथा उसका प्रबंध एवं नियंत्रण करता है । यद्यपि जोखिम उठाना उद्यमी का प्राथमिक कार्य है किंतु आधुनिक युग में उसे और भी कार्य संपन्न करने पड़ते है, जैसे नेतृत्व, सृजनात्मक तथा नवाचार संबंधी कार्य।

उद्यमी की परिभाषा (Definitions of Entrepreneur)

उद्यमिता एक अस्पष्ट अवधारणा है जिसके कारण भिन्न -भिन्न विद्वानों ने उद्यमी को अपने -अपने दृष्टिकोण से अलग-अलग परिभाषाएं दी है। अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से उद्यमी की परिभाषा का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है -

(I) परंपरागत अर्थव्यवस्था में **(In Traditional Economy),**

(II) विकासशील अर्थव्यवस्था में **(In Developing Economy),**

(III) विकसित अर्थव्यवस्था में **(In Developed Economy),**

(I) परम्परागत अर्थव्यवस्था में (In Traditional Economy) - परंपरागत अर्थव्यवस्था में उद्यमी को जोखिम वहनकर्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। कोई भी व्यक्ति जो व्यावसायिक जोखिम वहनकर्ता है। उद्यमी की श्रेणी में आता है। इस दृष्टिकोण से कुछ प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं निम्नलिखित है -

रिचर्ड केण्टीलोन के अनुसार , "उद्यमी वह व्यक्ति है जो किसी उत्पाद को अनिश्चित मूल्य पर बेचने के लिए निश्चित धनराशि देता है और तद्नुसार उसे प्राप्त करने एवं साधनों का उपयोग करने का निर्णय लेता है। "

परंपरागत अर्थशास्त्री श्री जे. बी. से. के अनुसार , "उद्यमी वह व्यक्ति है जो आर्थिक संसाधनों को उत्पादकता एवं लाभ के क्षेत्रों से उच्च क्षेत्रों की ओर हस्तांतरित करता है।"

एच. एफ. नाइट के अनुसार , "उद्यमी विशिष्ट व्यक्तियों का वह समूह है जो जोखिम उठाते हैं और अनिश्चितता का सामना करते हैं।"

एप. वी. हेने के अनुसार, "उत्पत्ति में निहित जोखिम उठाने वाला साधन ही उद्यमी है।"ब्रिटेनियाँ शब्दकोश के अनुसार, "उद्यमी एक व्यक्ति है जो भावी अनिश्चितताओं के मध्य किसी व्यवसाय के संचालन की जोखिम उठाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं में उद्यमी को किसी व्यवसाय की अनिश्चितताओं एवं जोखिमों का सामना करने वाले व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। जोखिम उठाने वाले व्यक्ति के रूप में उद्यमी की पहचान आज भी महत्वपूर्ण है। जोखिम होने पर ही उद्यमी की पहचान होती है।

(II) विकासशील अर्थव्यवस्था में (In Developing Economy)- भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देशों में उद्यमी को एक प्रवर्तक संगठनकर्ता एवं समन्वयकर्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। इस विचारधारा के अनुसार, उद्यमी वह व्यक्ति है जिसके मस्तिष्क में किसी व्यवसाय अथवा उद्योग की स्थापना का विचार उत्पन्न होता है और उसे व्यावहारिक रूप देने के लिए आवश्यक संसाधन जैसे मानव-शक्ति, सामग्री तथा पूंजी एकत्रित करता है एवं उसकी स्थापना की जोखिम उठाता है। जो व्यक्ति यह कार्य संपन्न करता है, वही उद्यमी कहलाता है। विकासशील अर्थव्यवस्था के संदर्भ में उद्यमी की कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित है -

अल्फ्रेड मार्शल के शब्दों में, "उद्यमी वह व्यक्ति है जो जोखिम उठाने का साहस करता है जो किसी कार्य के लिए आवश्यक पूंजी एवं श्रम की व्यवस्था करता है जो इसकी सामान्य योजना बनाता है तथा जो उसकी सूक्ष्म बातों का निरीक्षण करता है।"

जैम्स बर्न के अनुसार, "उद्यमी वह व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह है जो किसी नए उपक्रम की स्थापना के लिए उत्तरदायी होता है।"

गेराल्ड ए. सिल्वर के शब्दों में, "उद्यमी वह व्यक्ति है जो किसी नई वस्तु या सेवा के विचार की कल्पना करता है और फिर उस वस्तु या सेवा का उत्पादन करने के लिए एक व्यवसाय की स्थापना हेतू पूंजी प्राप्ति के स्रोत की खोज करता है।"

आर. टी. इली के अनुसार, "उद्यमी वह व्यक्ति है जो उत्पादक घटक को संगठित एवं निर्देशित करता है।"

वालरस के अनुसार, "उद्यमी वह व्यक्ति है जो दूसरे व्यवसायियों से कच्चा माल, भूस्वामियों से भूमि, श्रमिकों से अभिरुचियाँ, पूंजीपति से पूंजीगत माल खरीदा है तथा इनकी सेवाओं से निर्मित वस्तुओं को बेचता है।"

कार्ल मैंगर के अनुसार, "उद्यमी परिवर्तन लाने वाला प्रतिनिधि है जो संसाधनों को उपयोगी माल एवं सेवाओं में परिवर्तित करता है और इस प्रकार औद्योगिक विकास की परिस्थितियां उत्पन्न करता है।"

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश शब्दकोश के अनुसार, "उद्यमी वह व्यक्ति अथवा विशेषत: अनुबंधकर्ता जो किसी उपक्रम की स्थापना करता है तथा जो पूँजी व श्रम के बीच का कार्य करता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के अंतर्गत उद्यमी को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके मस्तिष्क में सबसे पहले किसी व्यवसाय अथवा उद्यम की स्थापना का विचार उत्पन्न होता है उसकी स्थापना के लिए आवश्यक संसाधन जैसे - मानव-शक्ति, सामग्री, यंत्र, पूंजी, तकनीक आदि एकत्रित करता है, जोखिम उठाता है और लाभ के रूप में उसका प्रतिफल प्राप्त करता है।

(III) विकसित अर्थव्यवस्था में (In Developed Economy) - विकसित अर्थव्यवस्था में उद्यमी का कार्य अत्यंत विशिष्ट व्यापक और जटिल हो जाता है और वह पेशेवर व्यक्ति का रूप धारण कर लेता है। प्रबंध गुरु श्री पीटर एफ. ड्रकर ने उद्यमी को एक नवप्रवर्तक एवं सामाजिक नायक की भूमिका निभाने वाले निम्नलिखित है –

फॉरेस्ट फ्रेन्ज के अनुसार, "उद्यमी प्रबंधक से बड़ा होता है वह प्रवर्तक तथा नवप्रवर्तक दोनों है हरबर्ट ईवान्स के अनुसार वह उद्यमी वह व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह है जो संचालित किए जाने वाले व्यवसाय के निर्धारण का कार्य करता है।"

पीटर एफ. ड्रकर के अनुसार, "उद्यमी सदैव परिवर्तन की खोज करता है, उस पर अनुक्रिया करता है और एक अवसर के रूप में उसका विदोहन करता है।"

जोसेफ ए. शुम्पीटर के अनुसार, "उद्यमी एक ऐसा व्यक्ति है जो नवाचार करता है धन एकत्रित करता है संसाधन एकत्रित करता है निपुणता को संगठित करता है नेतृत्व प्रदान करता है तथा संगठन की रचना करता है।"

उद्यमी की उपरोक्त परिभाषा ओं का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष रूप में सरल शब्दों में उद्यमी की परिभाषा निम्न शब्दों में दी जा सकती है, "उद्यमी वह व्यक्ति है जो व्यवसाय में लाभप्रद अवसरों की खोज करता है संसाधनों मानव-शक्ति, तकनीक, सामग्री एवं पूंजी आदि को एकत्रित करता है, नवाचार को जन्म देता है, जोखिम वहन करता हैं तथा अपने चातुर्य एवं तेजदृष्टि से असाधारण परिस्थितियों का सामना करता है।"

उद्यमी की विशेषताएं अथवा लक्षण **(Characteristics of Entrepreneur)**

उद्यमी की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है-

1. व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह है।

2. उद्यमी सुविचारित जोखिम वहनकर्ता होते हैं।

3. उद्यमी किसी उपक्रम की स्थापना के लिए आवश्यक संसाधन जैसे मानवशक्ति, सामग्री, पूंजी, तकनीक, बाजार आदि जुटाता है।

4. उद्यमी नवप्रवर्तनकर्ता होते हैं जो कुछ न कुछ नए और कुछ न कुछ भिन्न का सृजन करते हैं। उद्यमी नवीन उपक्रमों की स्थापना में विशेष दिलचस्पी लेता है।

5. उद्यमी अवसर पर विदोहन करते हैं।

6. उद्यमी में असाधारण एवं अनिश्चित परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता होती है।

7. उद्यमी में उच्च कोटि का आत्मविश्वास होता है जिसका उपयोग व लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करता है।

8. उद्यमी में अपार प्रेरक शक्ति होती हैं। वह अभिप्रेरक होता है।

9. उद्यमी व्यवसाय और उद्योग को कुशल नेतृत्व प्रदान करता है।

10. उद्यमी पेशेवर व्यक्ति, संगठनकर्ता एवं समन्वयकर्ता होता है। साथ ही वह विश्वासाश्रित संबंधों की स्थापना करता है

11. उद्यमी द्वारा लिए गए निर्णयों में पर्याप्त लोच होता है।

12. उद्यमी विश्लेषणात्मक होता है। उस पर किसी की पसंद ना पसंद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

13. उद्यमी का दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक होता है, नकारात्मक नहीं।

14. उद्यमी अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सदैव समर्पित होता है। उद्यमी में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने तथा उत्तरदायित्व ग्रहण करने की क्षमता होती है।

15. उद्यमी भविष्य दृष्टा होता है।

उद्यमी वर्ग का उद्भव (Emergence of Entrepreneur)

उद्यमी वर्ग की उद्भव को अनेक घटक जैसे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, रीति- रिवाज, वंश, परंपरा, पर्यावरण धर्म, जाति, शिक्षा, तकनीकी ज्ञान, पेशेवर पृष्ठभूमि, स्थानांतरण चरित्र, विचार, नितियाँ, आदर्श, स्वामित्व का प्रारूप आदि ने प्रभावित किया है । उद्यमी वर्ग के उद्भव को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक निम्नलिखित है :-

I. जाति उद्भव (Caste Emergence) - भारत में अधिकांश उद्यमी वर्ग का उद्भव जाति के आधार पर हुआ है कुछ धर्म व जातियाँ उद्यमी निपुणता को प्रोत्साहित करते हैं, जैसे- पारसी, पंजाबी, मारवाड़ी, महेश्वरी, गुजराती, सिंधी, वैश्य या बनिया आदि। इनका भारत के अधिकांश उद्योगों पर आज भी एकाधिकार है।

2 . पारिवारिक पृष्ठभूमि (Family Background)- उद्यमी वर्ग के उद्भव में पारिवारिक पृष्ठभूमि की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपने परिवार को ऊंचा उठाने, स्वतंत्र कार्य करने, अधिक धन कमाने, परिवार के सदस्यों को कार्य पर लगाने, पहलपन, दूरदृष्टि, प्रतिष्ठा पाने आदि जैसी प्रवृत्तियों ने उद्यमी वर्ग के उद्भव को अनेक प्रकार से प्रोत्साहित किया है। इन्होंने समूह का रूप धारण कर लिया जैसे - बिरला ग्रुप रिलायंस ग्रुप आदि ।

3. धार्मिक पृष्ठभूमि (Religious Background) - धार्मिक पर्व - त्यौहार,धार्मिक कर्मकांड, क्रियाकलापों ने भी उद्यमियों के उद्भव को प्रोत्साहित किया है

4. पेशेवर पृष्ठभूमि (Occupational Background)- उद्यमी वर्ग के उद्भव में पेशेवर पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उदाहरण के लिए कृषि व्यवस्था में संलग्न व्यक्तियों की तुलना में पेशेवर व्यक्ति उद्यमिता की ओर अधिक आकर्षित हुए हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार काफी संख्या में उद्योग स्थापित करने वाले साहसी ऐसे लोग थे जो कि शुरू में बेरोजगार थे। इस प्रकार उद्यमिता किसी विशेष पेशे तक सीमित नहीं है। बल्कि ' इसके लिए प्रवृत्ति, जोश, साहस, कौशल, प्रौद्योगिकी, दूरदृष्टि, आदि गुणों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में तकनीकी ज्ञान से ओतप्रोत व्यक्ति में प्रवेश कर रहे हैं।

5. स्थानांतरण चरित्र (Migratory Character) - उद्यमी के उद्भव में स्थानांतरण चरित्र की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 5 में से चार उद्यमी स्थानीय ना होकर अन्य राज्यों में से अथवा राज्य के अंदर विभिन्न स्थानों से आए हुए रहते हैं। राजस्थान के मारवाड़ी उसके उदाहरण ज्वलंत उदाहरण है।

6. शिक्षण, प्रशिक्षण एवं तकनीकी ज्ञान **(Education, Training and Technical Knowledge) -** उद्यमी वर्ग के उद्भव में शिक्षण प्रशिक्षण एवं तकनीकी ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे दिन लद गए जब कि अनपढ़ लोग बड़े बड़े औद्योगिक साम्राज्य स्थापित कर लिया करते थे। वर्तमान में व्यवसायिक औद्योगिक क्षेत्र दिनों - दिन जटिल होता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण है आपसी प्रतियोगिता, जटिल सरकारी नियमन एवं कानून सरकारी नीतियों एवं प्रेरणाएँ, बदला हुआ आर्थिक एवं व्यावसायिक पर्यावरण, बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं की बढ़ती हुई भूमिका, अनुसंधान पर बल ऊपर, तकनीकी संसाधनों की स्थापना, शिक्षण एवं प्रशिक्षण की सुविधाएं आदि घटको ने उद्यमी वर्ग के उद्भव में शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान को प्रोत्साहित किया है। आजकल स्कूलों, कॉलेजो, तकनीकी संस्थानों, प्रबंध विज्ञान संस्थानों, प्रशिक्षण संस्थाओं से निकलकर बड़ी संख्या में नवयुवक व्यवसायिक औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।

7. प्रारंभ किए गए उद्योग के प्रकार **(Types of Industry Started) -** उद्यमी वर्ग के उद्भव में उद्योग के प्रकार की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में कोरोना महामारी के बाद बड़े-बड़े शहरों से लौट कर आए युवाओं ने खादी उत्पादों, सिलाई -कढ़ाई से जुड़े हुए, खाद्य पदार्थ एवं अन्य विभिन्न उत्पादों से संबंधित औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की है।

8. व्यक्तिगत घटक **(Individual Factors) -** उद्यमी वर्ग के उद्भव में व्यक्तिगत घटक भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति विशेष कोई नवीन उपक्रम स्थापित करने का साहस करता है, उसके लिए आवश्यक संसाधन जुटाता है, प्रबंध करता है, विकास की योजना बनाता है,उन्हें यथा समय क्रियान्वित करता है, उत्पन्न चुनौतियां का सामना करता है, अपने कौशल का उपयोग करता है, जोखिम उठाता है, तथा अन्ततः उसे एक लाभकारी उपक्रम में परिणित करता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त और अन्य ऐसे घटक हैं जो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे -मनोवैज्ञानिक घटक, आदर्श, पर्यावरणीय घटक, अभिप्रेरणा, आत्मनिर्भरता, स्वतंत्र रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति, संस्कृति, स्वामित्व का प्रारूप आदि ।